Chapter 10

bihar board 9 class Geography Notes – आपदा प्रबंधन

आपदा प्रबंधन : एक परिचय

महत्त्वपूर्ण तथ्य-

वैसी घटना जिसके प्रभाव से मानव जीवन को भयंकर क्षति हो तथा वह त्रासदी का जनक हो, आपदा कहलाता है । यह दो प्रकार की होती है-(i) मानव जाति आपदा (ii) प्राकृतिक आपदा।

प्राकृतिक आपदा में बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि आते हैं । मानवजनित आपदाओं में रासायनिक, जैविक, नाभिकीय कारकों से उत्पन्न आपदा, कल-कारखानों में दुर्घटना, जहरीले उत्पाद का रिसाव, आग लगना इत्यादि आते हैं। आपदा मानवजनित हो या प्राकृतिक वह सदैव विनाशकारी होती है । अत: उनका प्रबंधन आवश्यक है । आपदा को आने से रोक लेना या पूर्णत: समाप्त कर देना असंभव है लेकिन इसके प्रभाव को कम किया जा सकता है । प्रबंधन अर्थात् प्रभाव को कम कर लेने से त्रासदी तथा आपदा प्रबंधन के मुख्यत: चार घटक होते हैं-

(i) आपदा के पूर्व की तैयारी मरनेवालों की संख्या कम होती है।

(ii) जवाबी कार्रवाई तथा राहत कार्य

(iii) सामान्य जीवन स्तर पर पुनः स्थापित होना अति पुनर्वास

(iv) रोकथाम और दुष्प्रभाव को कम करने की योजना ।

किसी कोच में आप आने के पूर्व चार रखी जाने वाली कुछ महत्वपूर्ण बातें होती हैं, जैसे चेतावनी प्रणाली विकसित करना, असुरक्षित स्थानों की पहचान करना, पारस्परिक सहायता विकसित करना, राहत कार्य चलाने है। स्थलों की पहचान करना आदि । आपदा आते ही जवाबी कार्रवाई करना भी आवश्यक होती है, जैसे आपातकालीन क्रिया केन्द्र चालू करना, प्रबंधन योजनाओं को कार्यरूप देना, संसाधन जुटाना आदि इसके अतिरिका भवनों का पुनःनिर्माण, रोजगार के अवसर दना, अस्थायी आवास सुलभ करवाना भी आवश्यक कार्य है।

भारत के प्रायः सभी क्षेत्रों में लगभग सालोंपर प्राकृतिक आपदाओं का दौर चलता रहता है। 2001 के भुज मुकम तथा 2004 को सुनामी ने आपदा प्रबंधन की आवश्यकता को और भी जरूरी बना दिया है । राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन के लिए कई योजनाएं बनाई गई है जो भविष्य में आपदाओं से निबटने में लाभदायी साबित होगी। आपदा प्रबंधन के लिए समूह में कार्य करना आवश्यक है। अतः आपदा प्रबंधन के लिए समुदाय की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

https://www.evidyarthi.in/